Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(Central University)
B-4 Qutub Institutional Area, New Delhi- 110016

अंशकालिक कार्यक्रम

(प्रमाण पत्रीय एवं डिप्लोमा)

Part Time Programmes

(Certificate & Diploma)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र नई दिल्ली- 110016

संशोधित नवीन पाठ्यक्रम

दिनांक : २९-३०/०१/२०१८

ज्योतिष विभाग, वेदवेदाङ्गसंकाय

भैषज्य-ज्योतिषम्, (एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम्)

प्रथम सत्र - प्रथम पत्र

मेडिकल-एस्ट्रोलॉजी : मूल संकल्पना एवं आधारभूत सिद्धान्त

❖ **इकाई - एक**

अंक-१००

- यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'' का सिद्धान्त
- ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव
- ग्रहों के प्रभाव को जानने के साधन
- अन्तर्दृष्टि (इन्ट्यूशन)
- सर्वेक्षण (ऑब्जर्वेशन)
- वैदिक चिन्तनधारा की पृष्ठभूमि
- कर्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद
- भाग्य एवं कर्म
- कर्मवाद एवं ज्योतिष
- कर्मवाद का उदाहरण

❖ **इकाई - दो**

- प्राचीन काल में रोग विचार के सन्दर्भ
- रोगोत्पत्ति के कारण
- चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट्ट के मत
- रोगोत्पत्ति के कारण
- आहार-विहार की अनियमितता
- वात-पित्त-कफ जैसे दोषों का प्रकोप
- जन्मान्तर में किये हुए कर्म
- समय की प्रतिकूलता
- कर्मजन्य रोग एवं कालजन्य रोगों का परिज्ञान

30-1-18 30.01.18 30.1.18 30/01/18 30/1/18

- स्टेथिस्कोप बनाम होरोस्कोप
- जीवन के घटनाक्रम का पूर्वानुमान
- योगफल, दशाफल एवं गोचरफल

❖ **इकाई - तीन (योग फल)**

- योगों के भेद
- सद्योरिष्ट योग
- बालारिष्ट योग
- अल्पायु एवं मध्यमायु योग
- रोगों के योग

❖ **इकाई - चार**

- दशा के भेद
- विंशोत्तरी
- अष्टोत्तरी
- योगिनी एवं अन्य
- दशा फल

पाठ्य-ग्रन्थ : मेडिकल एस्ट्रोलॉजी - मूल संकल्पना एवं आधारभूत सिद्धान्त।
लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

संदर्भ-ग्रन्थ : वीरसिंहावलोक - लेखक : राजावीर सिंह
: गदावली - लेखक : चक्रधर जोशी
: भैषज्यज्योतिषम् - लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

प्रथम सत्र - द्वितीय पत्र

ज्योतिष एवं रोग

❖ **इकाई - एक** **अंक-१००**

- अंगों के प्रमुख रोग
- अन्धता के योग
- आँखें फूटना एवं उसके योग
- बधिरता के योग
- मूकता के योग
- हृदय रोग के योग
- हृदय शूल एवं हत्कम्प के योग
- प्लीहा के योग
- मधुमेह के योग
- नपुंसकता एवं बांझपन के योग
- स्त्री रोग के योग
- बवासीर के योग
- पंगुता के योग

❖ **इकाई - दो**

- दोष जन्य रोग
- पक्षाघात के योग
- शीतपित्त के योग
- क्षय के योग
- ज्वर के योग
- बालरोग-पीलिया एवं सूखा के योग
- अनेक रोगों के योग
- भेंगापन आदि के योग, विविध नेत्र रोगों के योग
- कर्ण रोग
- बहिरापन एवं उसके योग, कम सुनाई देने के योग
- कान कटने के योग, कान में दर्द, मवाद पड़ना एवं कान बहने के योग

❖ **इकाई - पाँच**

- नासारोग एवं उसके योग, मुखरोग, जिह्वा रोग के योग
- मूकत्व एवं उसके योग
- हकलाहट के योग, तुतलाहट के योग, दन्त रोगों के योग
- तालु-रोग के योग, अन्य मुख रोगों के योग
- कण्ठरोग

❖ **इकाई - छः**

- गलगण्ड एवं गण्डमाला के योग, गले के अन्य रोगों के योग
- गले के रोग से मृत्यु का योग, हस्त रोग, लूलापन एवं उसके योग,
- हाथ कटने के योग, हाथ मी पीड़ा होने के योग, हृदयरोग एवं उसके योग

पाठ्य-ग्रन्थ : ज्योतिष और रोग भाग-1, लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

प्रकाशक : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

भैषज्य-ज्योतिषम्, लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

गदावली, लेखक : डॉ. चक्रधर जोशी**भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)**

प्रथम सत्र - तृतीय पत्र

रोगों का संभावित काल, उनकी साध्यता एवं असाध्यता

❖ **इकाई - एक** **अंक-१००**

- रोगोत्पत्ति का सम्भावित समय
- दशाओं में विंशोत्तरी की प्रधानता
- विंशोत्तरी दशा
- दशा साधन की रीति
- दशा का स्पष्टीकरण
- अन्तर्दशा साधन की रीति (सोदाहरण)

❖ **इकाई - दो**

- प्रत्यन्दर्शा एवं उसके साधन की रीति
- सूक्ष्मदशा एवं उसके साधन की रीति
- प्राणदशा एवं उसके साधन की रीति
- योग द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञान
- दशा के द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञान
- सूर्य की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- चन्द्रमा की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- मंगल की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- बुध की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- गुरु की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- शुक्र की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- शनि की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- राहु की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- केतु की दशा में उत्पन्न होने वाले रोग

❖ **इकाई - तीन**

- अन्तर्दशा द्वारा रोगोत्पत्ति काल का निर्णय
- किस ग्रह की अन्तर्दशा में कौन-सा रोग होगा?
- सूर्य की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- चन्द्रमा की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- मंगल की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- राहु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- गुरु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- बुध की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग

- केतु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- शुक्र की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
- विभिन्न ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- राहु की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- शनि की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- बुध की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- केतु की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा में होने वाले रोग
- ग्रहों की सूक्ष्म दशा में उत्पन्न होने वाले रोग
- ग्रहों की प्राण दशा में उत्पन्न होने वाले रोग

❖ **इकाई - चार**

- प्रश्नकालीन ग्रह स्थिति द्वारा रोगारम्भ काल का ज्ञान
- दिन या रात्रि में रोगोत्पत्ति का ज्ञान
- प्रहर में उत्पन्न होने वाले रोगों का ज्ञान
- गोचरीय ग्रह स्थिति द्वारा रोगारम्भ काल का ज्ञान
- रोगारम्भ काल का निर्णय

पाठ्य-ग्रन्थ : रोगों का सम्भावित काल, उनकी साध्यता एवं असाध्यता।

लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

प्रकाशक : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

संदर्भ-ग्रन्थ : वीरसिंहावलोक, लेखक : राजवीर सिंह

भैषज्य-ज्योतिषम्, लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

गदावली, लेखक : डॉ. चक्रधर जोशी

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

प्रथम सत्र - चतुर्थ पत्र

मन्त्रसाधना द्वारा ग्रह चिकित्सा

❖ **इकाई - एक** **अंक-१००**

- ➢ मानव-जीवन
- ➢ जीवन के घटनाक्रम को जानने की रीति
- ➢ फल
- ➢ फल और उसके भेद
  - ▪ सामान्य-फल
  - ▪ योग-फल
  - ▪ स्वाभाविक (आत्मभावानुरूपी) फल
- ➢ मन्त्र साधना के सहायक उपकरण
  - ▪ अधिकार
  - ▪ दीक्षा
  - ▪ सम्प्रदाय
  - ▪ आचार
  - ▪ ध्यान
  - ▪ पुरश्चरण
- ➢ साधना का महत्व
- ➢ साधना का स्वरूप
- ➢ साधना का सौन्दर्य
- ➢ साधक का धर्म
- ➢ हमारा आधार और लक्ष्य
- ➢ नवग्रह- उनके अधिदेव एवं प्रत्यधिदेव
- ➢ ग्रह-शान्ति का आधार
- ➢ ग्रह शान्ति
- ➢ ग्रहों का ध्यान
  - ▪ सूर्य

- चन्द्रमा
- मंगल
- बुध
- गुरु
- शुक्र
- शनि
- राहु
- केतु
- **इकाई - दो**
- दशाफल
- गोचर-फल

➢ जीवन की समस्याओं का कारण और उसका निर्धारण

➢ जीवन की समस्या एवं संकटों का निवारण

- मन्त्र
- रत्न
- औषधि
- दान

➢ स्नान ग्रहों के मन्त्र

- सूर्य के मन्त्र
- चन्द्रमा के मन्त्र
- मंगल के मन्त्र
- बुध के मन्त्र
- गुरु के मन्त्र
- शुक्र के मन्त्र
- शनि के मन्त्र
- राहु के मन्त्र
- केतु के मन्त्र
- ग्रहों के मन्त्र

- **इकाई - तीन**

  ग्रहचिकित्सा का सबसे विश्वसनीय साधन मन्त्र

  - मन्त्र की परिभाष
  - मन्त्र के भेद
  - मन्त्र का अर्थ
  - मन्त्रचैतन्य आदित्य-हृदय-स्तोत्र
  - चन्द्रमा-स्तोत्र
  - मंगल-स्तोत्र
  - बुध-स्तोत्र
  - बृहस्पति-स्तोत्र
  - शुक्र-स्तोत्र
  - शनि-स्तोत्र
  - ग्रहशान्ति की विधि
- मन्त्रसाधना द्वारा ग्रह शान्ति
  - ग्रहों के हवन
  - ग्रहशान्ति जप आदि की संख्या
- प्रतीकोपासना
  - अधिदेवताओं के मन्त्र
  - प्रत्यधिदेवताओं के मन्त्र
  - लोकपालदेवताओं के मन्त्र, दिक्पालों के मन्त्र

❖ **इकाई - चार**

  - मन्त्र-साधना
  - मन्त्र-साधना के प्रधान उपकरण
- ज्ञान
- विश्वास
- गुरु
- काल
  - भाग्य और कर्म
  - काल एवं काल-विज्ञान (ज्योतिष)

- ज्योतिषशास्त्र की विशेषताएँ
- अनिष्टयोगकारक योगों की शान्ति
- अरिष्ट योग और उसकी शान्ति
- रोगनिवृत्ति के मन्त्र
  - शिवपंचाक्षरी-मन्त्र
  - अष्टाक्षरी शिव-मन्त्र
  - दशाक्षरी शिव-मन्त्र
  - अष्टादशाक्षर हनुमद्-मन्त्र
  - द्वादशाक्षर हनुमद्-मन्त्र
  - हनुमन्नवार्ण-मन्त्र
  - रोगनाशक दुर्गा-मन्त्र
  - रोगोपद्रवनाशक घण्टाकर्ण-मन्त्र
- मृत्यु भय से निवृत्ति के मन्त्र
  - त्र्यक्षरमृत्युञ्जय -मन्त्र
  - लघुमृत्युञ्जय -मन्त्र
  - मृत्युञ्जय-मन्त्र
  - महामृत्युञ्जय -मन्त्र
  - पौराणिक मृत्युञ्जय -मन्त्र

पाठ्य-ग्रन्थ : मन्त्र-साधना द्वारा ग्रह चिकित्सा भाग-2

लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

प्रकाशक : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

30.1.18

30.01.18

30/1/18

30/1/18

30/1/18

30/01/18

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

द्वितीय सत्र - प्रथम पत्र

मेडिकल एस्ट्रोलॉजी : मूल संकल्पना एवं आधारभूत सिद्धान्त

❖ **इकाई - एक** अंक-१००

- गोचर के भेद
- दीर्घकालीन गोचर
- वर्षफल विचार
- तात्कालिक गोचर
- नक्षत्रचार
- राशिचार
- गोचर फल

❖ **इकाई - दो**

- ग्रह फल के सूचक हैं नियामक नहीं!
- गर्भाधान काल एवं जन्मकाल की विशेषताएँ
- चन्द्रकलायें एवं रोग
- ज्योतिष शास्त्र की आयुर्वेद शास्त्र की देन
- रोग परिज्ञान के सिद्धान्त
- रोग ज्ञान का प्रमुख उपरकरण ग्रहयोग
- योग के सात भेद
- योगों के तीन प्रमुख तत्त्व
- ग्रह, राशि एवं भाव

❖ **इकाई - तीन**

- रोगों के विचार के लिए ग्रहों का परिचय
- रोगों के विचार के लिए राशियों का परिचय
- अंगों की प्रतिनिधि राशियाँ
- मेषादि द्वादश राशियों के रोग
- रोगों के विचारार्थ भावों का परिचय

- अंगों के प्रतिनिधि भाव
- रोगों के विचारार्थ द्रेष्काणों का परिचय
- विविध-द्रेष्काण एवं उनके रोग

❖ **इकाई - चार**

- ग्रहों को रोगकारक बनाने वाले नौ कारण
- रोग भाव का स्वामित्व
- अष्टम एवं व्यय भाव का स्वामित्व
- रोग भाव में स्थिति
- लग्न में स्थिति या लग्नेश होना
- नीच राशि शत्रु राशि में होना या निर्बलता
- अवरोहीपन
- क्रूर षष्ठ्यंश में स्थिति
- पाप ग्रहों का प्रभाव
- अरिष्ट कारकता एवं मारकता
- राशि एवं भाव के रोगकारक बनाने के दश कारण
- षष्ठ भाव
- अष्टम एवं व्यय भाव
- पाप ग्रहों के मध्य में स्थिति
- पाप ग्रहों की युति एवं दृष्टि
- त्रिक स्थान से सम्बन्ध
- स्वामियों की अनिष्ट स्थान में स्थिति
- भाव राशि एवं इनके स्वामियों में दुर्बलता
- भाव से त्रिक् या त्रिकोण में पाप ग्रह होना
- रोगकारक ग्रहों से सम्बन्ध
- शुभ ग्रहों का प्रभाव न होना

पाठ्य-ग्रन्थः मेडिकल एस्ट्रोलॉजी - मूल संकल्पना एवं आधारभूत सिद्धान्त।

लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

संदर्भ-ग्रन्थ : वीरसिंहावलोक, लेखक : राजवीर सिंह

गदावली, लेखक : डॉ. चक्रधर जोशी

भैषज्यज्योतिषम्, लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

द्वितीय सत्र - द्वितीय पत्र

ज्योतिष एवं रोग

❖ **इकाई - एक** **अंक-१००**

- हृदय शूल, हृत्कम्प, उदर रोग
- अरुचि, अजीर्ण एवं मन्दाग्नि के योग, अजीर्ण रोग से मृत्यु के योग
- अतिसार के योग, संग्रहणी के योग, गुल्म रोग के योग
- प्लीहा रोग के योग
- कृमिरोग के योग, जलोदर रोग के योग, उदरशूल रोग के योग
- नाभिरोग के योग, कुक्षिरोग के योग, कुबड़ेपन के योग, गुर्दे के रोग

❖ **इकाई - दो**

- प्रमेह आदि मूत्राशय के रोग, उपदंश, सुजाक आदि लिंग रोग
- गुप्तरोग के योग, वीर्यरोग
- नपुंसकता के योग, वन्ध्यात्व के योग, स्त्री रोग
- गर्भपात के योग, गर्भपात कब होगा?
- वृषणरोग एवं अण्डवृद्धि के योग

❖ **इकाई - तीन**

- गुदारोग, अर्शरोग के योग, भगन्दर के योग, गुदा में अन्य रोगों के योग
- पैर के रोग, घुटने में दर्द के योग, पंगुता के योग
- फील पॉव एवं अन्य पैर के रोगों के योग
- वातपित्तादि विकार से उत्पन्न रोग
- वातरोग, आमवात के योग, शूलरोग के योग, सन्धिमूल के योग
- पक्षाघात के योग, अन्य वात रोगों के योग
- पित्तरोग, रक्त पित्त के योग, शीतपित्त के योग, कृष्ण पित्त के योग, दाहरोग के योग

❖ **इकाई - चार**

- अन्य पित्त रोगों के योग
- कफ रोग, खांसी एवं श्वास के योग, जुकाम एवं श्लेष्मा के योग
- क्षयरोग के योग, हिक्का, स्वर भेद एवं छर्दि आदि अन्य कफरोग एवं उनके योग
- ज्वर के योग, पीतिया के योग, कामला रोग के योग
- सूखा रोग के योग
- शोकरोग के योग, मिरगी एवं मूर्च्छा के योग
- रक्त विकार के योग, मेंदोरोग के योग, वीर्यविकार, नर्मविकार
- दाद, खाज एवं खुजली के योग, फोड़ा, फुन्सी, छाले एवं घाव होने के योग
- गण्डरोग के योग
- विसर्प एवं स्फोट के योग, स्नायु विकार के योग, विदधि
- बादी एवं मुक्ति विरोध रोगों के योग, अनेक रोगों के योग

पाठ्य-ग्रन्थ : ज्योतिष और रोग भाग-1, लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

प्रकाशक : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

भैषज्य-ज्योतिषम्, लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

गदावली, लेखक : डॉ. चक्रधर जोशी

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

द्वितीय सत्र - तृतीय पत्र

रोगों का संभावित काल, उनकी साध्यता एवं असाध्यता

❖ **इकाई - एक** **अंक-१००**

- साध्य एवं असाध्य रोग
- आयु एवं उसके भेद
- योगायु
- सद्योरिष्ट योग
- अरिष्ट योग
- अल्पायु योग
- मध्यमायु योग
- दीर्घायु योग
- अमितायु योग

❖ **इकाई - दो**

- सद्योरिष्ट, बालारिष्ट एवं अल्पायु योगों का विस्तृत विवेचन
- मध्यमायु, दीर्घायु एवं अमितायु योगों का विस्तृत विवेचन
- आयु का स्पष्टीकरण
- निसर्गायु
- पिण्डायु
- अंशकायु
- लग्नायु
- इनका गणित
- कहाँ किस प्रकार से गणित किया जाय?
- चारों आयुर्दायों में से कौन-सी आयु ग्राह्य है?

❖ **इकाई - तीन**

- दशायु
- मृत्युदायक दशायें एवं अन्तर्दशायें
- मारकस्थान एवं मारकेश निर्णय
- मृत्युकाल निर्णय में कुछ महत्वपूर्ण बातें

❖ **इकाई - चार**

- असाध्य एवं साध्य रोग
- अष्टमभाव में स्थित ग्रहों के मृत्युदायक रोगों के योग
- अष्टमभाव पर दृष्टि रखने वाले मृत्युदायक रोगों के योग
- तृतीयभाव में स्थित मृत्युदायक रोगों के योग
- अष्टमस्थान की राशिवश मृत्युदायक रोगों के योग
- द्रेष्काणराशिवश मृत्युदायक रोगों के योग
- मृत्युदायक रोगों के योग
- दुर्घटना में मृत्युयोग
- रोगारम्भ काल से रोग के साध्यासाध्यत्व का विचार
- साध्यरोग
- रोगी की मृत्यु का योग
- मृत्युयोग का समय
- रोगी के स्वस्थ होने का योग

पाठ्य-ग्रन्थ : रोगों का सम्भावित काल, उनकी साध्यता एवं असाध्यता।

लेखक : प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

प्रकाशक : श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

संदर्भ-ग्रन्थ : वीरसिंहावलोक, लेखक : राजवीर सिंह

भैषज्य-ज्योतिषम्, लेखक : डॉ. बिहारी लाल शर्मा

गदावली, लेखक : डॉ. चक्रधर जोशी

भैषज्य-ज्योतिषम् (मेडिकल एस्ट्रोलॉजी)

द्वितीय सत्र - चतुर्थ पत्र

लघुशोधप्रबन्ध एवं प्रायोगिक कार्य

लघु शोध प्रबन्ध — अंक-७५

मौखिक परीक्षा — अंक-२५